

**श्री उपसभापति :** कितना समय चाहेंगे माननीय सदस्य ?

**श्री श्याम लाल यादव :** अभी तो मैंने थोड़ा कहा है।

**श्री उपसभापति :** सदन की कार्यवाही 2 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

The House then adjourned for lunch at two minutes past one of the clock.

The House reassembled at five minutes past two of the clock, Mr. Deputy Chairman in the Chair.

#### REFERENCE TO STATEMENT ON THE RECENT RAILWAY ACCI- DENTS

**श्री भीष्म नारायण सिंह (बिहार) :** उपसभापति महोदय, एक शब्द मैं निवेदन करना चाहता था वैसे मैं ने आप को सूचना दी थी इसलिये कि इस विषय पर मैं आप के माध्यम से सरकार का ध्यान आकृष्ट करूं, लेकिन आप ने उस को रिजेक्ट कर दिया, लेकिन आप ने देखा कि हाल ही में आसाम में रेल दुर्घटना हुई और उस के अलावा बंबई में दो गाड़ियों का टकराव हुआ जिस में कितने ही लोग मारे गये। तो इस संबंध में सरकार की ओर से कोई बयान तो होना ही चाहिए ताकि उस पर हम कुछ विवाद कर सकते। लेकिन वह नहीं हुआ। और दूसरी चीज मैं यह कहना चाहता हूं कि यह बात भी रेल मंत्रालय से हो संबंधित है कि शाही जी का प्रश्न आज ही के लिये था, ताराकित प्रश्न संख्या 221 इसमें माननीय नागेश्वर प्रसाद शाही जी ने प्रश्न किया था कि क्या यह सच है कि कलकत्ता मेल द्वारा दिल्ली में अलीगढ़ तक श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ वातानुकूलित डिब्बे में बिना टिकट यात्रा करते हुए तीन व्यक्तियों को हाल

में रेलवे कर्मचारियों ने पकड़ा था और यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या धोरा है।

रेलवे मंत्री का उत्तर...

[Interruptions]

**श्री उपसभापति :** आपने पहले तो जो चर्चा शुरू की, वह भी नियमानुसार नहीं है, तो प्रोजेक्ट करने का फायदा म्या। मतलब ही नहीं निकलता अगर उस चीज में जाने लगेंगे।

**श्री भीष्म नारायण सिंह :** लेकिन मांग तो कर सकते हैं।

**श्री उपसभापति :** अपना स्थान ग्रहण कर लीजिये। किसी बात की मांग कोई नहीं करता बगैर पूछे, बगैर परमिशन लिये।

**श्री भीष्म नारायण सिंह :** सरकार का उत्तर कि कोई आदमी पकड़ा ही नहीं गया। रेडियो और अखबारों में यह विषय आया है। हम लोगों का अधिकार जो है उसको प्रयोग करने की अनुमति तो दी जायेगी। यही मेरा निवेदन है।

**श्री उपसभापति :** नियमानुसार आप जब चाहें, कोई विषय उठा सकते हैं। लेकिन बगैर परमिशन के जैसा कि आपने आज किया है, पहले कुछ कार्यवाई नहीं की, आपको रोकना भी उचित नहीं समझा। लेकिन इस तरह की चीज जो पहले मना की जा चुकी है, उसको इस तरह से शुरू कर देंगे, तो कोई प्रतिक्रिया चल नहीं सकती। बस इस बात को बढ़ाइये नहीं, मेरा निवेदन है आपसे।

**श्री मनुभाई मोती लाल पटेल (गुजरात) :** यह पुराने मंत्री हैं, ऐसा नये मंत्री की वजह से कुछ नहीं हो रहा है।

**श्री उपसभापति :** नया सेशन शुरू हुआ है और प्रारम्भ में ही ।

**DISCUSSION ON THE WORKING OF  
MINISTRY OF PETROLEUM, CHE-  
MICALS AND /FERTILIZERS contd.**

**श्री श्याम लाल यादव :** जनता पार्टी और उसके मंत्री बार-बार इस बात की दुहाई देते हैं कि पिछले तीस साल में इतना धन, साधन नहीं दिया गया जिससे कृषि की अपेक्षा की गई है, उसके लिये विकास हो सके । लेकिन इस मंत्रालय ने कृषि के उत्पादन के लिये जो कार्य किया है, या जो कार्य हो रहा है, अगर उस तरफ माननीय सदन ध्यान दें तो यह प्रतीत होगा कि इस मंत्रालय का बहुत बड़ा काम उर्वरक पैदा करना है और वगैर उर्वरक के आज खेती में विकास होना असम्भव है । उर्वरक पर जितना धन अब तक लगाया गया है, उसके विकास की जो क्षमता इस देश में बनाई गई और जिस प्रकार से नई नई योजनाएं हाथ में ली जा रही हैं, क्या यह इस बात का सबूत नहीं है कि कृषि के लिये पर्याप्त ध्यान दिया गया है ।

मान्यवर, 1950 के शुरू में उर्वरक पैदा करने की कुल क्षमता हमारे देश में 85 हजार टन नाइट्रोजन की थी और 64 हजार टन पी2 ओ5 की और अब क्षमता जो बढ़ी 3,028 लाख टन नाइट्रोजन की हो गई और 91 लाख टन पी2 ओ5 की हो गई और आज 24 बृहद् उर्वरक कारखाने और 29 उर्वरक कारखाने सुपर-फास्फेट पैदा कर रहे हैं । आगे की योजना, जैसा कि एक सवाल के जवाब में आपके सामने मान्यवर मंत्री जी ने बताया कि जो बाम्बे से एसोसिएटेड गैस मिल रही है, उससे और बड़े-बड़े कारखाने स्थापित किये जा रहे हैं ताकि उर्वरक की पैदावार बढ़ाई जा सके ।

इसलिये जो उत्पादन का लक्ष्य है उसमें बराबर वृद्धि होती चली जा रही है

आज उर्वरक का जो उपयोग हमारे देश में हो रहा है, सम्भवतः लगभग 18 किलोग्राम उर्वरक प्रति हैक्टर होता जा रहा है जो दुनिया के आंकड़ों को देखते हुए कम है और आज अधिकांश 80 प्रतिशत किसान केवल 20 प्रतिशत उर्वरक का उपयोग कर रहे हैं और 20 प्रतिशत किसान बाकी 80 प्रतिशत का उपयोग कर रहे हैं । इस तरह से यह जाहिर है कि उर्वरक का विकास हमारे देश में उसके निर्माण के लिये बनाने के लिये और अधिक जोर देने की आवश्यकता है । उर्वरक में जो नाइट्रोजन, फास्फेटिक और पोटाश है, उसमें पोटाश का भी आज निर्यात किया जा रहा है । हमारे कारखानों की क्षमता 80 प्रतिशत तक हो जाए तो मान्यवर मैं समझता हूं कि बहुत अच्छा होगा । किन्हीं कारखानों में जो स्टेबीलाइज्ड कारखाने हैं, उनकी क्षमता बढ़ी है, इसमें सन्देह नहीं है । लेकिन दूसरे कारखानों की क्षमता 36 प्रतिशत से गिर कर 26 प्रतिशत तक पहुंची है । यह बात समझ में नहीं आती । और मान्यवर मंत्री ने दूसरे सदन को बताया कि खास तौर से बिजली की कटौती के कारण इन कारखानों में उर्वरक की पैदावार घटी है ।

उर्वरक पैदा करने के लिए आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन, हाइड्रोजन, कोयला, पानी और बिजली तथा दूसरे तरीके हैं । इसलिए जाहिर है कि बिजली का बहुत बड़ा भाग इसमें काम आता है । जो विचार इस समय पेट्रोलियम मंत्रालय में चल रहा है कि ऐसे जहां कारखाने हैं वहां पर कैप्टिव प्लांट बिजली के लिए बनाये जायें, उस पर मुझे एक शंका है क्योंकि बिजली बोर्डों का कार्य जो अब तक देखा जा रहा है सारे देश में वह संतोषजनक नहीं कहा जा सकता ।